ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23041
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23041

CONFERENCE PAPER

भराष्ट्रीय धरोहर और संस्कृति का संवर्धन विशेषकर नक्कारा वाद्य के संदर्भ में

अर्चा श्रीवास्तव[1] एवं प्रो॰ रश्मि श्रीवास्तव[2]

1. (शोधार्थी)दयालबाग़ शिक्षण संस्थान ,आगरा-5.
2. (निर्देशिका)दयालबाग़ शिक्षण संस्थान ,आगरा-5.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
धरोहर, संसकृति, संवर्धन, नक्कारा वाद्य।

Abstract

भारत देश प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं का देश है। भारत की राष्ट्रीय धरोहर वह अमूल्य विरासत है, जो हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त हुई है।भारतीय ऐतिहासिक स्मारक, परम्पराएँ, रीति-रिवाज़, साहित्य एवं कलाएँ भारतीय धरोहर का हिस्सा हैं। ये सभी तत्व भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर अद्वितीय एवं समृद्ध विरासत के रूप में स्थापित करते हैं। भारतीय संगीत इस धरोहर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जीवंत अंग है, जो भारतीय संस्कृति और गौरवपूर्ण इतिहास को अभिव्यक्तकरता है। भारतीय संगीत गायन, वादन एवं नृत्य का त्रिवेणी संगम है। चूंकि शोध विषय वाद्यविधा से संबंधित है अस्तु भारतीय वाद्य परंपरा पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि प्रागैतिहासिक काल से हीभारतीय संगीत में वाद्य यंत्रों की एक समृद्ध परम्परा देखने को मिलती है जिन्हे मूलतः चार वर्गों में वगीकृत किया गया – तत् , घन , सुषिर व अवनद्ध । संगीत में वाद्यों का विशेषकर अवनद्ध वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। और इनमें से ही एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवनद्ध वाद्य हैं 'नक्कारा'। यह वाद्य मूलतः प्राचीन वाद्य दुंदुभि का परिवर्तित एवं परिष्कृत रूप है। दुंदुभि वाद्य वैदिक परंपरा से सम्बद्ध वाद्य था ,

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- अर्चा श्रीवास्तव
Address:-(शोधार्थी)दयालबाग़ शिक्षण संस्थान ,आगरा-5.

जिसका उल्लेख वेदों में प्रचुरता से प्राप्त होता है। काल परिवर्तन व सांस्कृतिक एवं जन रुचि के साथ ही प्रयोग की दृष्टि से इस वाद्य के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों ने इसे एक भिन्न व परिष्कृत स्वरूप प्रदान किया। और यह वाद्य एक नवीन द्विनगीय वाद्य के रूप में प्रतिष्ठित हुआ, जिसका उल्लेख मध्यकालीन समय के ग्रंथों से प्राप्त होता है। मुगल काल में नक्कारा एक प्रमुख अवनद्ध वाद्य के रूप में प्रतिष्ठित था। मध्यकालीन सूत्र यह संदर्भ देते हैं कि यह वाद्य बादशाहों और सुल्तानों का विशिष्ट वाद्य था, जिसका वादन विधिवत् शास्त्रीय पद्धति से किया जाता था। मध्यकाल में प्रचलित शास्त्रोक्त रीति से वादन योग्य यह वाद्य कालांतर में अपनी वैभवशाली परम्परा से दूर होता चल गया, शनैः-शनैः लोक वाद्य के रूप में प्रचलित हुआ और भारतीय लोकसंगीत का अभिन्न अंग बन गया।वर्तमान समय में नक्कारा राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश आदि क्षेत्रों की लोक-संगीत परम्परा में विशेष स्थान रखता है। यह वाद्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक एवं गौरव-चिह्न है। अतः इसकी सुदीर्घ और समृद्ध वादन परंपरा को भावी पीढ़ियों तक सतत् रूप से हस्तान्तरित करना तथा इसके विकसित और उन्नत स्वरूप को पुनर्स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में नक्कारा वाद्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, इसकी समृद्ध वादन परंपरा तथा लोक-संगीत में इसकी भूमिका का विस्तृत विवेचन किया जाएगा।

Introduction:-

भारत एक प्राचीन सभ्यता और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं वाला देश है। भारत की राष्ट्रीय धरोहर और संस्कृति मात्र इतिहास का हिस्सा नहीं अपितु वर्तमान जीवन का सजीव अंग भी है। भारतीय धरोहर में यहाँ की भौतिक स्मारक, साहित्य, लोक-परंपराएँ, भाषाएँ और आध्यात्मिक मूल्य सभी शामिल हैं। यही विविधता भारत को विश्व में विशिष्ठ पहचान प्रदान करती है। किसी भी देश की धरोहर केवल भौतिक स्मारकों का संग्रह मात्र नहीं, बल्कि उस राष्ट्र की चेतना, स्मृति और आत्मा का जीवंत स्वरूप है। यह वह सांस्कृतिक संचय है जो पीढ़ियों के अनुभव, साधना और जीवन मूल्यों से निर्मित होता है। भारत जैसे बहुरंगी संस्कृतियों के देश मेंधरोहर का अर्थ – यहाँ के इतिहास, दर्शन, साहित्य, स्थापत्य, विभिन्न भाषाएं, लोक-परंपराएँ और विशेष रूप से संगीत से है। जब हम भारतीय ऐतिहासिक इमारतों की बात करते हैं, तो वहाँ केवल स्थापत्य कला की ही बात नहीं होती अपितुउस काल विशेष की संस्कृतिक परिपक्वता, सौंदर्यबोध और आध्यात्मिक दृष्टि का भी साक्षात्कारकरते हैं। इसी प्रकार भारतीय संगीत भी हमारी संस्कृति की वह मधुर अभिव्यक्ति है; जो मानव हृदय और चेतना को गहराई से स्पर्श करती है ।

भारतीय संगीत मूलतः गायन, वादन एवं नृत्य की त्रिवेणी है। भारतीय संगीत की यह अविरल धारा प्रकृति तथा चराचर जगत में सदियों से वर्तमान तक समाहित है और प्रवाहित है। संगीत का इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना मानव मनोभावों का है। प्राचीन काल से ही संगीत मानव के हृदय गत भावों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम रहा है; भिन्न-भिन्न भावभिव्यक्ति करने वाली विभिन्न ध्वनियाँ संगीत उत्पत्ति के मूल में रही हैं और इन्हीं विभिन्न ध्वनियों से अनेक भारतीय वाद्य यंत्रों का सृजन हुआ है।भारतीय संगीत में गायन तथा नृत्य का अपना महत्वपूर्ण स्थान तो है ही परंतु संगीत में वाद्य विशेष स्थान रखते हैं क्योंकि इनमें ना तो गायन की भांति काव्य अपेक्षित है और ना ही नृत्य के समान अंग संचालन । यह संगीत की पूर्णरूपेण प्रतिनिधि कला है जिसमें स्वर व लय का स्वच्छन्द एवं प्रभावपूर्ण प्रयोग देखने को मिलता है । अतः वाद्य शब्द से तात्पर्य, "वद्तीति वाद्यम्" अर्थात् जो बोलत है वही वाद्य है। वाद्य शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'बजने योग्य यंत्र विशेष'। यह शब्द 'वद्' धातु, (जिसका अर्थ है 'बोलना') में 'यत्' प्रत्यय लगाने से बना है। अतः आंतरिक भावों व अनुभूतियों को संगीतात्मक ध्वनि तथा बोलों के माध्यम से प्रकट करने वाले उपकरण वाद्य कहलाते हैं।(श्रीवास्तव)

प्राचीन काल से भारतीय संगीत में मूलतः चार प्रकार के वाद्यों का उल्लेख मिलता है – 'तत्', 'घन', 'सुषिर' व 'अवनद्ध'। अनवरत चलती आ रही भारतीय संगीत परंपरा में वाद्यों का और विशेषकर अवनद्ध का महत्वपूर्ण स्थान है।चूंकि शोध का विषय अवनद्ध वाद्य से संबंधित है अतः अवनद्ध वाद्य से तात्पर्य वे वाद्य , जो भीतर से पोले तथा चमड़े से मढ़े होते हैं और हाथ या किसी अन्य वस्तु के

ताड़न से शब्द उत्पन्न करते हैं, अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं ।[बंबम]अवनद्ध वाद्यों के क्षेत्र में अगर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट विदित होता है आदिकाल से ही भारतीय संगीत में असंख्य अवनद्ध वाद्य प्रयोग में लाए जाते रहे हैं। प्राचीन कालीन वाद्यों में दुंदुभि, भूमि दुंदुभि, मृदंग, पणव, मुरज, दर्दुर, पटह आदि वाद्य प्रमुख थे। तत्पश्चात मध्यकाल में भारतीय संगीत पर यवन संस्कृति के प्रभाव के परिणामस्वरूप इन वाद्यों के ढाँचेगत स्वरूप , वादन विधि , प्रयोग एवं उपयोगिता की दृष्टि से परिवर्तन होते चले गए। मध्यकाल में विशेष रूप से मर्दल , पटह, दमामा , हुडुक्का , दुक्कड़ , ढ़ोल , आवज , भेरी इत्यादि वाद्य संगीत जगत के सम्मुख आए तथा इनमें से कुछ ऐसे वाद्य रहे जो किंचित परिवर्तनों के साथ आज भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं। इनमें एक प्रमुख वाद्य है, 'नक्कारा'।

प्रस्तुत शोध-प्रपत्र में नक्कारा वाद्य से संबंधित विविध पक्षों यथा - इसकीऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नामकरण की प्रक्रिया,संरचनात्मक (ढाँचेगत) विकास, प्रचलित विभिन्न स्वरूप एवं इसकी वर्तमान स्थिति के साथ ही संरक्षण के उपायों जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है:-

नक्कारा : ऐतिहासिक विवरण (नामकरण एवं ढाँचेगत विकास) :

नक्कारा वाद्य की ऐतिहासिक पृष्टभूमि पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि यह वाद्य मूलतः प्राचीन दुंदुभि का ही विकसित रूप है।जिस प्रकार वैदिक साहित्य में वीणा का प्रचुर वर्णन आता है उसी प्रकार अवनद्ध वाद्यों में दुन्दुभि का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद (1, 28, 5, 6, 47, 29 और 31), अथर्ववेद (5, 20, 1, 5, 21, 7, 5, 31, 7, 6, 38, 4, 92, 1, 41), तैत्तिरीय ब्राह्मण (1, 3, 6, 2), शतपथ ब्राह्मण (5, 1, 5, 6), वाजसनेयी संहिता (16, 5), काठक संहिता (34, 35), सांख्यायन श्रौत सूत्र (17, 24, 11) और बृहदारण्यक उपनिषद् (2, 4, 6) में दुन्दुभि का वर्णन आया है। ऐतरेय आरण्यक (5, 1, 5) व सांख्यायन आरण्यक (29, 45) में भूमि-दुन्दुभि का वर्णन आता है।[मिश्र]

'संगीत-रत्नाकर'(सं. र.,वाद्याध्याय, पृ. सं. 483)में दुन्दुभि का वर्णन इस प्रकार दिया गया है[मिश्र]:

आम्रदुमसमुद्भूतो महागात्रो महाध्वनिः ॥1145॥
कांस्यभाजनसम्भारगर्भी वलयवर्जितः।
चर्मनद्धाननो बद्धी वधैर्गाढं समन्ततः ॥1146॥
दृढचर्मेण कोणेन वाचो वर्णन दुन्दुभिः।
मेथनिघोषगम्भीरवोंकारस्यात्र मुख्यता ॥1147॥
मङ्गले विजये चैव वायते देवतालये ॥

उपर्युक्त वर्णन के अनुसार दुन्दुभि में एक ही नग होता है और वह आकार में बड़ा होता है। प्राचीन दुन्दुभि तथा भूमि दुन्दुभि एक ही नग का बड़ा नगाड़ा जैसा होता था किन्तु जब से उसका सम्बन्ध शहनाई वाद्य से हुआ तब से उसमें भी भीषण तथा जोरदार ध्वनि उत्पादन के अतिरिक्त मृदंग जैसे पाटाक्षर निकालने की भी आवश्यकता हुई। अतः दुंदुभि वाद्य जो कि बड़े आकार का और एक नगीय वाद्य था उसके साथ एक छोटे आकार की झील का भी समावेश हो गया। जिसके कारण दुन्दुभि में मृदंग आदि के पाटाक्षरोंका वादनसंभव हो गया। डॉक्टर लाल मणि मिश्र जी ने अपनी पुस्तक में दुंदुभि वाद्य के संदर्भ में उल्लेख किया है कि दुन्दुभि, नगाड़ा, नक्कारा, धौंसा, निसान, तुम्बकी, दमामा आदि एक ही जाति के वाद्य हैं, इनमें कुछ के नाम उनके ढाँचेगत भिन्नता केकारण पड़े हैं तथा कुछ नाम मुस्लिम प्रभाव से आये। मध्यकालीन कवियों द्वारा रचित साहित्य तथा अन्य संगीत विषयक ग्रंथों के अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि संगीत-रत्नाकरग्रंथ के उपरांत दुन्दुभि वाद्यही नगाड़ा नाम से प्रचलित हुआ; जो दो नगीय वाद्य था। 'संगीतसार' ग्रंथ में उपलब्ध दुन्दुभि के लक्षण-वर्णन से उसके स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान होता है, जो इस प्रकार है- इसको लौकिक में नगारा कहते हैं। ताँबा,

लोहा या अष्ट धातु के दो बड़े-बड़े अथवा छोटे कटोरा के आकार कराइए उनकी पेंदी में एक-एक छेद करिए। ताहाँ छोटी होय सो मादी और बड़ी होय सो नर जानिए। तहाँ मादी को मुख बारीक चाम में राल लगाय मढ़िए वा चाम छेद करि के डोरा

चाम के लगाइए, नीचे पेंदी में एक चाम की एडी घरि वामें डोरा सिगरे बाँधिए। इसको बजाते समय आग की आँच या सूरज की गरमी से तपाय बजाइए। काठ के दोय डंका तें दोनु हाथ सों बजाइए। इसको लौकिक में 'कुण्डकुण्डी' कहत हैं। इहाँ जो नर होइ ताको मुख मोटे चाम सो मढ़िए पहले मादी की ही तरह। खाल के तसमान सों गाढ़ी कीजिए और काठ के मोटे डंका सो बजाइए। तहाँ जात्रा के समय ताल नहीं बजाइए। जहाँ जुद्ध में जाइए तहाँ जुदे-जुदे बजाइए। जहाँ उछवादिक वा विवाहादिक में दोऊ मृदंग के पाटाक्षर जुत मिला के बजाइए। दोऊ जब मिले तब 'नौबत' कहे हैं। नगारे बड़े की बड़ी धुन होत हैं छोट की छोटी धुन होत हैं। इनको चौड़े लम्बे बनवाना होव सो अपनी इच्छा सो बनाइए जैसी चाहे होय तैसी तरह के नगारा बनाइए। वह देवतान के मन्दिर वा सिगरे उछव में बजाइए ॥ इति दुन्दुभि को लक्षण सम्पूर्णम् ॥"(संगीतसार, भाग 2, पृ. 75)(मिश्र)

जिस प्रकार तबले में दो नग होते हैं-एक दायाँ और दूसरा बायाँ और दोनों को मिलाकर तबला कहा जाता है, इनमें एक बड़ा नगाड़ा होता है, जिसका स्वर गम्भीर होता है, तथा दूसरा छोटा नगाड़ा होता है, जिसका स्वर ऊँचा और तीव्र होता है। इस प्रकार यह दो नगों वाला द्विस्वरीय वाद्य है।छोटा नगाड़ा सामान्यतः मिट्टी का बना होता है, जिसे 'झील' या 'अघोटी' कहा जाता है। इसके मुख पर चमड़ा चढ़ाया जाता है और चमड़े की डोरियों द्वारा इसे कसकर बाँधा जाता है। दूसरा, बड़ा नगाड़ा शंकुाकार धातु का बना होता है, जिसके मुख का व्यास लगभग एक हाथ के बराबर होता है और उस पर मोटा चमड़ा मढ़ा रहता है। इसका आकार आवश्यकता अनुसार छोटा या बड़ा बनाया जा सकता है।इसके वादन हेतु दो शंकुाकार गोल लकड़ियों का प्रयोग किया जाता है, जो प्रायः एक हाथ लंबी होती हैं। उत्तर प्रदेश में प्रचलित नौटंकी (स्वांग) के साथ बजाया जाने वाला नगाड़ा, दुन्दुभि के स्वरूप से पूर्णतः साम्य रखता है। दुंदुभि वाद्य जो परिवर्तित समय में नगाड़ा अथवा नक्कारा नाम से प्रचलित हुआ इसका वादन प्रायः आनन्दोत्सव, विवाहादि के समय तथा देव-मन्दिरों में मुख्यतः किया जाता है। यदि इसके साथ शहनाई अथवा नफीरी वादन भी हो तो वह 'नौबत' कहलाती है। मध्य काल में राजदरबारों तथा जागीरदारों के यहाँ नौबतखाना होता था; जहां समय-समय पर नौबत बजा करती थी।सूरदास के दान-लीला प्रकरण में राजदरबार में नौबत बजने का वर्णन किया गया है। जिसमें गोपियों कृष्ण से कहती हैं(मिश्र)-

"जो तुम्हीं हो सबके राजा। बेनु, निसान स्रंग क्यों बाजे, बाजेनौबत बाजा।":-

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में प्रचलित '**दुंदुभि' वाद्य** ही कालांतर मेंविशेषकर मध्यकाल के दौरानविकसित होकर '**नक्कारा' वाद्य** के रूप में स्थापित हुआ। मध्यकालीन संगीत परंपरा में नक्कारा एक प्रमुख अवनद्ध में प्रतिष्ठित रहा और इसका उपयोग विभिन्न राजकीय, धार्मिक तथा सांस्कृतिक अवसरों पर व्यापक रूप से किया जाता था।

वर्तमान विभिन्न स्वरूप :

वर्तमान समय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नक्कारा वाद्य के अनेक रूप प्रचलन में हैं। अलग-अलग प्रदेशों में इसकी संरचना, आकार तथा वादन शैली में कुछ भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं, जिसके कारण इसे विविध नामों से जाना और प्रयोग में लाया जाता है। इनके प्रमुख स्वरूपों का सचित्र विवरण इस प्रकार है- (मालवीय)

क्र सं	नाम	राज्य	आकार	मुख	शरीर	वादन विधि	चित्र
1.	नक्कारा	राजस्थान/ उत्तर प्रदेश	एक भाग बड़ा व एक भाग छोटा।	दो	बाँया भाग– धातु, दायाँ भाग- लकड़ी द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	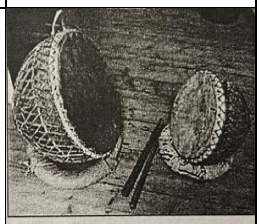 नक्कारा[128]
2.	ताशा	उत्तर प्रदेश	एक भाग बड़ा व एक भाग छोटा।	दो	मिट्टी अथवा धातु द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	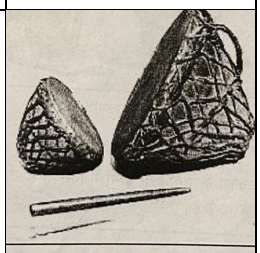 ताशा[130]
3.	नमबट	गुजरात	दोनों भाग बराबर	दो	लकड़ी अथवा धातु द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	नमबट[132]
4.	धामरम	तमिलनाडु	एक भाग बड़ा व एक भाग छोटा।	दो	दोनों भाग - लकड़ी द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	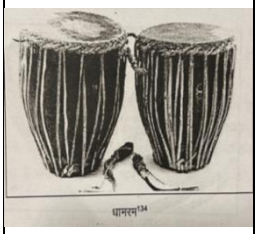 धामरम[134]
5.	कुंडुलम	तमिलनाडु	दोनों भाग बराबर (नक्कारा वाद्य से कुछ भिन्न आकार का)	दो	दोनों भाग - लकड़ी द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	कुण्डुलम[142]

6.	खारम	असम	एक भाग बड़ा व एक भाग छोटा।	दो	दोनों भाग - लकड़ी द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	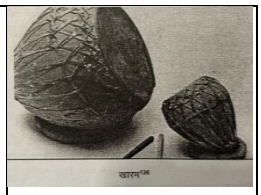 खारम[138]
7.	नगाड़ा	हिमाचल प्रदेश / बिहार	दोनों भाग बराबर	दो	बाँया भाग– धातु, दायाँ भाग- लकड़ी अथवा मिट्टी द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	नगाड़ा[139]
8.	टिमकी	मध्य प्रदेश	दोनों भाग बराबर	दो	मिट्टी / लकड़ी द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	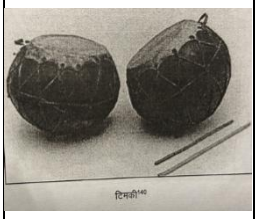 टिमकी[140]
9.	तिक्कारा	उड़ीसा	दोनों भाग बराबर	दो	लकड़ी अथवा धातु द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	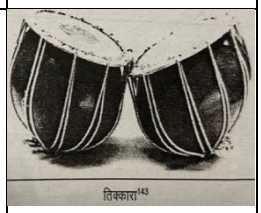 तिक्कारा[143]
10.	सम्बल	महाराष्ट्र	एक भाग बड़ा व एक भाग छोटा।	दो	लकड़ी अथवा धातु द्वारा निर्मित।	लकड़ी के दो कोणों के माध्यम से वादन।	सम्बल[144]

व्यापक रूप से लोकप्रिय तथा सशक्त वाद्य होने के पाश्चात्य भी नक्कारा वाद्य का यह दुर्भाग्य रहा है की इसे तबला व पखावज जैसे ताल वाद्यों के समकक्ष स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। नक्कारा वाद्य स्वयं में ही पूर्ण ताल वाद्य है जिसके वादन में दक्षता प्राप्त करने के लिए अत्यंत कठिन साधना की आवश्यकता होती है।फिर भी नक्कारा वाद्य एवं नक्कारा वादकों को संगीत समाज में हेय दृष्टि से देखा

जाता है । संभवतः शास्त्रीय गायन , ग़ज़ल , भजन जैसी गायन शैलीयों के साथ नक्कारे की संगत ना होने के कारण, इसे नगरीय सभ्यता से अलग ग्रामीण अंचल का लोक वाद्य समझे जाने की भ्रांति के कारणवश भी इसे सम्मान जनक स्थान प्राप्त नहीं हो सका।

नक्कारा वाद्य की वर्तमान स्थिति:

नक्कारा वाद्य भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग है।समय के साथ इसके स्वरूप, निर्माण, वादन-शैली और प्रयोग के क्षेत्र में परिवर्तन तो हुए, परंतु इसकी मूल पहचान और सांस्कृतिक महत्व आज भी उतना ही प्रभावशाली है जितना प्राचीन काल में था।वर्तमान समय में नक्कारा वाद्य भारतीय संगीत में प्रमुख एवं प्राण वाद्य के रूप में स्थापित है । संगत की दृष्टि से भारत के विभिन्न क्षेत्रों जैसे राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, तमिलनाडु आदि में भिन्न भिन्न गायन शैलियों एवं नृत्य शैलियों में इस वाद्य पर संगत हेतु विभिन्न तालों का तो वादन किया ही जाता है साथ ही आधुनिक संगीत जैसे 'ताल-कचहरी', 'फ़्यूज़न म्यूजिक' आदि में भी धीरे धीरे अपना स्थान बना रहा है।

नक्कारा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं इसके बदलते स्वरूप का अध्ययन यह स्पष्ट दर्शाता है कि परंपरा और आधुनिकता के समन्वय से यह वाद्य आज भी भारतीय संगीत और संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है।अतः नक्कारा वाद्य की प्राचीनकालीन गौरवशाली स्थिति को पुनः स्थापित करना तथा पूर्व में प्रचलित इस वाद्य की शास्त्रोक्त रीति से किए जाने वाले वादन विधान को प्रकाश में लाना अत्यंत आवश्यक है। इस वाद्य पर बजाए जाने वाले वर्ण, बोल समूहों, वादन प्रकारों तथा विभिन्न बंदिशों का संकलन एवं लेखन कर उन्हें संगीत जगत के समक्ष प्रस्तुत करना;तथा इस वाद्य से संबंधित अनेक उच्च कोटि कलाकार, जो अपनी इस वादन कला को संजोते हुए अपने-अपने क्षेत्रों में साधनारत हैं, ऐसे कलाकारों को संगीत समाज के समक्ष उजागर करना भी आवश्यक है।अतः नक्कारा जैसे पारंपरिक वाद्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए निम्न प्रयास आवश्यक हैं-

संरक्षण के उपाय:

- **शिक्षा के माध्यम से संरक्षण-** नक्कारा वाद्य के संरक्षण के सबसे प्रभावी उपाय के रूप में इसे शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाना चाहिए। विद्यालयों, महाविद्यालयों और संगीत संस्थानों में नक्कारा वाद्य के अध्ययन और प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। इससे विद्यार्थियों में इस वाद्य के प्रति रुचि बढ़ेगी और नई पीढ़ी इन्हें सीखने के लिए प्रेरित होगी।
- **प्रशिक्षण शिविर और कार्यशालाएँ-**नक्कारा वाद्य के कलाकारों द्वारा समय-समय परप्रशिक्षण शिविर, कार्यशालाएँ आयोजित किए जाने चाहिए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से युवा पीढ़ी को इस वाद्य की बनावट, वादन तकनीक और उनके सांस्कृतिक महत्व के बारे में जानकारी एवं इसका वादन सीखने के अवसर प्राप्त हो सकें।
- **सरकारी और संस्थागत सहयोग-**सरकार द्वारा , सांस्कृतिक संस्थाओं तथा संगीत के क्षेत्र में कार्यरथ विभिन्न समितियों द्वारा इसके संरक्षण हेतु विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए।कलाकारों को आर्थिक सहायता की जानी चाहिए। साथ ही संगीत अकादमियों और सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा नक्कारा वाद्य कलाकारों को मंच प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे उनकी कला को पहचान मिल सके।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन-**उत्सवों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नक्कारा वाद्यके प्रदर्शन को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे अधिक से अधिक लोग इस कला को सुन सकें, देख सकें तथा इसके प्रति आकर्षित हो सकें ।
- **दस्तावेजीकरण एवं शोधकार्य-**नक्कारा वाद्य इतिहास, निर्माण विधि, वादन शैली और उनके सांस्कृतिक महत्व पर शोध कार्य किया जाना चाहिए।साथ ही इन वाद्यों के बारे में पुस्तकें, शोध पत्र, ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग और डिजिटल अभिलेख तैयार किए जाने चाहिए। इससेभविष्य की पीढ़ियों हेतु इस कला को संरक्षित किया जा सकता है ।
- **कलाकारों का सम्मान एवं प्रोत्साहन-**नक्कारा वाद्य कलाकारों को सम्मान और पुरस्कार देकर उनके कार्य को प्रोत्साहित करना चाहिए।

- **मीडिया और आधुनिक तकनीक का उपयोग**- आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया, इंटरनेट, यूट्यूब और अन्य डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके इस कला का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है।इन माध्यमों द्वारा इसके वादन की रिकॉर्डिंग, ऑनलाइन प्रशिक्षण और जानकारी आसानी से लोगों तक पहुँचाई जा सकती है।
- **संग्रहालय और प्रदर्शनी की स्थापना-**नक्कारा वाद्य के संरक्षण के लिए संग्रहालयों और प्रदर्शनी केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए।जहाँ नक्कारा जैसे पारंपरिक वाद्य को सुरक्षित रखा जा सकता है और लोगों को उनके इतिहास और महत्व के बारे में जानकारी दी जा सके; इत्यादि ।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नक्कारा वाद्य भारतीय संगीत परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्राचीन काल में प्रचलित दुन्दुभि वाद्य से विकसित,'नक्कारा' ने मध्यकाल में एक प्रमुख अवनद्ध वाद्य के रूप में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की तथा राजदरबारों, धार्मिक अनुष्ठानों, उत्सवों और सामाजिक अवसरों में इसका व्यापक प्रयोगहुआ। समय के साथ इसके स्वरूप, नाम और वादन शैली में क्षेत्रानुसार विविध परिवर्तन अवश्य हुए, परंतु इसकी मूल सांस्कृतिक पहचान और महत्व आज भी अक्षुण्ण है। वर्तमान समय मेंयद्यपि नक्कारा एक सशक्त और प्रभावशाली ताल वाद्य हैपरंतु फिर भी इसे तबला और पखावज जैसे वाद्यों के समान प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हो सकी। परिणामस्वरूप अनेक उत्कृष्ट कलाकारों की साधना और इस वाद्य की समृद्ध परंपरा संगीत समाज में अपेक्षित पहचान से वंचित है।

अतः आवश्यक है कि नक्कारा वाद्य के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार के लिए संगठित रूप से प्रयास किए जाएँ। शिक्षा व्यवस्था में इसके अध्ययन को स्थान देना, प्रशिक्षण शिविरों एवं कार्यशालाओं का आयोजन, कलाकारों को मंच और सम्मान प्रदान करनातथा आधुनिक मीडिया और शोध कार्यों के माध्यम से इसका दस्तावेजीकरण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन प्रयासों के माध्यम से न केवल इस वाद्य की प्राचीन गौरवशाली परंपरा को पुनर्जीवित किया जा सकता हैअपितु आने वाली पीढ़ियों को भी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का सशक्त माध्यम प्राप्त होगा।नक्कारा वाद्य का संरक्षण केवल एक वाद्य या कला रूप को बचाने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह भारतीय संगीत परंपरा और सांस्कृतिक अस्मिता को सुरक्षित रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. आचार्य गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ताल कोश, इलाहाबाद रूबी प्रकाशन, 2017.
2. डॉ कुहू मालवीय, मध्यकालीन सांगीतिक ग्रंथों में अवनद्य वाद्यों का स्वरूप एवं लय- ताल, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2021.
3. डॉ महेंद्र प्रसाद शर्मा 'बंबम',अवनद्य वाद्य सिद्धांत एवं परंपरा, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चंडीगढ़, 2008.
4. डॉ. लाल मणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024.